मेरे वेदानुसंधान कार्य का मुख्य लक्ष्य

✍ आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

आज कुछ महानुभाव मेरे कार्य पर प्रश्नचिह्न लगाने का प्रयास करते हैं, मानो मेरा अनुसंधान बिना किसी प्रयोग वा उत्पाद के व्यर्थ है। मैं इस विषय में यही कहना चाहता हूँ कि वे महानुभाव मेरे कार्य व उद्देश्य से ही नहीं, अपितु वेद व वर्तमान सैद्धान्तिक भौतिकी से भी प्रायः अनभिज्ञ हैं। मैंने इस न्यास के अन्तर्गत अपना कार्य 10 अक्टूबर 2004 में प्रारम्भ किया था, उस समय आर्य समाज, सिरोही के एक सज्जन ने मुझसे विशेष आग्रह किया था–

> 'आप यज्ञ पर विशेषकर वृष्टि यज्ञ पर अनुसंधान करें, जिससे प्रायः अकाल से जूझते राजस्थान को इसका लाभ मिल सके। इससे आपके साथ लाखों लोग जुड़ जायेंगे और परोपकार भी होगा। यदि आयुर्वेद को लेकर भी यज्ञ पर अनुसंधान किया जाए, तब भी लोगों का भारी समर्थन मिलेगा।'

उनकी बात अपने स्थान पर उचित थी, परन्तु मेरा उद्देश्य मात्र जनसमर्थन व यश की कामना नहीं था। मैंने इस सुझाव पर विचार भी किया। यज्ञ पर अनुसंधान करने हेतु कार्बनिक रसायन, मौसम विज्ञान व आयुर्वेद का अध्ययन करना आवश्यक प्रतीत हुआ। इसके अतिरिक्त यज्ञ सम्बन्धी वैदिक वाङ्मय का अध्ययन करना आवश्यक समझा। यह कार्य

मेरे लिए कठिन भी नहीं था। उधर परिणाम यह होता कि इससे जनता को भौतिक लाभ मिलता और मुझे यश व धन, परन्तु मेरा जीवन मात्र इसी में लगे, यह मुझे संतोषजनक नहीं लगा। जनसाधारण स्वस्थ व समृद्ध बने, यह उत्तम बात है, परन्तु इससे भी उत्तम यह है कि जनसाधारण का मन व आत्मा भी स्वस्थ व संस्कारित बने, जिससे संसार में हिंसा, वैर, भेदभाव, ईर्ष्या, द्वेष, कामुकता, अहंकार, क्रोध, झूठ, छल-कपट आदि रोगों का नाश हो सके। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व सर्वत्र ही एकत्व एवं पावनता का साम्राज्य होवे। यदि यह हो गया, तो शारीरिक रोग व प्राकृतिक प्रकोपों की समस्या स्वयमेव शनैः-2 दूर हो सकती है। आज धर्म के नाम पर हिंसा, अलगाव, आतंक, अन्धविश्वास, अन्धी आस्था, अविद्या, दुराचार आदि दोषों का ताण्डव हम विश्वभर में सुनते व देखते हैं। वेद, ऋषियों व देवों को मात्र हिन्दुओं की अन्धश्रद्धा के कारागार में बन्द कर दिया गया है। अन्य मतावलंबी इन्हें पराया मानते हैं। हिन्दू भी इन्हें मात्र कर्मकाण्ड का साधन मानते हैं। ईश्वरोपासना के स्थान पर मात्र महापुरुषों के चित्रों की पूजा शेष रह गयी है, तो कहीं दुराचारी व ठगी के द्वारा आर्थिक साम्राज्यों के सम्राट् बनकर पूजे जा रहे हैं। कहीं ईश्वर व धर्म के नाम पर आतंकवाद व छुआछूत का ताण्डव हो रहा है। मानवता नष्ट हो गई है तथा दानवता नग्न नृत्य कर रही है। रंगभेद, लिंगभेद, भाषाभेद, संस्कारभेद आदि नाना भेदों के चलते, वेदादि शास्त्रों के प्रति घृणा के वातावरण में मैं लौकिक सुखों व लोकसंग्रह के लिए केवल वृष्टि अथवा आरोग्य हेतु यज्ञ पर अनुसंधान करूँ, यह विशेष कल्याणकारी नहीं प्रतीत हुआ। यदि मैं किसी विमानादि यान्त्रिक अनुसंधान को महत्व देता, तब भी उसका यही फल मिलता। इन दोनों ही क्षेत्रों में अनुसंधान का भी अपना महत्त्व है और कुछ महानुभाव इन क्षेत्रों में अनुसंधान करते भी रहे हैं व आज भी कर रहे हैं।

जबलपुर के डॉ. फुन्दनलाल अग्निहोत्री, जो एम.डी. फिजीशियन थे, उस समय टी.बी. सैनिटोरियम चलाते थे। जब टी.बी. की एलोपैथी पद्धति में भी कोई अचूक चिकित्सा नहीं थी, वे केवल यज्ञ से ही टी.बी. के असाध्य रोगियों को स्वस्थ किया करते थे। पण्डित वीरसेन वेदश्रमी व पण्डित हरिप्रसाद शर्मा वृष्टियज्ञ पर कार्य करते थे। इस क्षेत्र में कार्य करने वाले भी समाज के द्वारा सहयोग के पात्र हैं, परन्तु जब तक यह भारत और विश्व एक मानव धर्म सनातन वैदिक धर्म की ओर उन्मुख नहीं होगा, तब तक चरित्र भ्रष्ट, हिंसक व कामी मानव की दीर्घायु मानवता वा प्राणिमात्र को त्रास देने वाली ही होगी, न कि कल्याणकारिणी। आज स्वास्थ्य, समृद्धि आदि लौकिक विषयों की बात करने वाले यह बात भूल ही जाते हैं। अनेकत्र समाज सेवा का कार्य करने वाले कथित विद्वान्, अध्यात्म के कथित प्रवक्ता योगिजन ईर्ष्या–द्वेष–अहंकार–लोभ एवं नारी–आकर्षण आदि पापों से बच नहीं पा रहे हैं। मेरी दृष्टि में वेद विद्या का मर्म जाने बिना तथा ईश्वर की सच्ची साधना के बिना धन व यश की आकांक्षावश प्रचार में लग जाना ही इसका मुख्य कारण है।

वेद की अपौरुषेयता व सर्वविज्ञानमयता को संसार के समक्ष स्थापित करने का मैंने अभूतपूर्व संकल्प लिया था। वेद व आर्ष ग्रन्थों को समझने की सनातन वैज्ञानिक प्रणाली, जो महाभारत युद्ध के पश्चात् लुप्त हो गई, की स्थापना मेरे लिए चुनौती थी। मेरे लिए धन, पद, प्रतिष्ठा, जनसमर्थन आदि का कभी महत्त्व नहीं रहा, बल्कि वेद, सत्य व नैतिकता रूपी धन को पाकर संसार में अकेला भी रह जाऊँ, तब भी श्रेयस्कर होगा।

आज लोक में ब्रह्मचारी, संन्यासी, वानप्रस्थी तथा गृहस्थ किसी भी आश्रम में स्थित कथित धर्माचार्य केवल अर्थसंग्रह व प्रसिद्धि के लिए

अपने-2 लक्ष्य निर्धारित करते हैं। संतोष, ईश्वरप्रणिधान व त्याग-तप का कहीं संकेत भी नहीं दिखाई देता, तब वे धर्म, तप, त्याग का जनसाधारण को क्या उपदेश दे सकते हैं? योग के प्रथम अंग यम (अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अस्तेय व अपरिग्रह) का नाम नहीं, तब कहाँ योग बचेगा? अहो! कुम्भीधान्य त्यागी-तपस्वी ब्राह्मणों के नाम लेने वाले सम्पूर्ण वसुधा की सम्पत्ति का संग्रह करने का उद्योग करते हुए देशवासियों को देशभक्ति, ईश्वर-भक्ति व तप-त्याग का पाठ पढ़ाते देखे जाते हैं, यह कैसी विडम्बना है।

मेरा उद्देश्य वेद की वैज्ञानिकता व ईश्वरीयता की स्थापना करना है, जिसके कारण मत-सम्प्रदायों में बंटी मानवता पुनः एकता के सूत्र में बन्ध सके। वेद व भगवान् मनु के नाम पर कुछ हजार वर्ष से चली आ रही छुआछूत, कथित जातीय भेदभाव, वैमनस्य, अन्धविश्वास, पशु-हिंसा, मांसाहार, मदिरापान व यौन उच्छृंखलता दूर होकर सत्य, शिवत्व व सुंदरता का सुखद साम्राज्य इस संसार में हो सके। भारत की प्रबुद्ध पीढ़ी में नव-राष्ट्रीय स्वाभिमान जाग सके, बौद्धिक दासता समाप्त हो सके। इसके साथ ही अन्य देशों के प्रबुद्धों को भी यह बोध हो सके कि वे भी वैदिक आर्यों (श्रेष्ठ मनुष्यों) की सन्तान हैं, भारत देश उनके पूर्वजों का भी देश है तथा भारत ही सबका गुरु व राजा हुआ करता था, अन्य देशों में मानव का आगमन बाद में हुआ। सच्चे वैदिक धर्म की स्थापना से व्यक्तिगत हित पारिवारिक हितों में साधक बनेंगे, बाधक नहीं। विभिन्न परिवारों के हित समाज व क्षेत्र के हितों में साधक बनेंगे, समाज व क्षेत्रों के हित राष्ट्रहित के साधक ही बनेंगे और प्रत्येक देश का हित सम्पूर्ण विश्व के हित का साधक बनेगा, बाधक कदापि नहीं।

आज पारिवारिक एकता के नाम पर पड़ोसी का अहित करने का प्रयास किया जा रहा है, सामाजिक उन्नति के नाम पर अन्य समाजों की अवनति का उद्योग किया जाता है, हिन्दू हित के नाम पर मुस्लिम मात्र को गाली देना अथवा 'इस्लाम खतरे में है' का नारा लगाकर हिन्दू, ईसाई, बौद्ध आदि का संहार करना परम्परा बन गया है। कथित दलित हित के नाम पर अन्यों के अधिकारों के हरण की चेष्टा करना, पवित्रता के नाम पर कथित दलितों से घृणा करना तथा राष्ट्रवाद के नाम पर अन्य देशों के विनाश की प्रवृत्ति अधिकांश देशों में चल रही है। सर्वत्र अराजकता, कामुकता, हिंसा, अशान्ति, कट्टरता, असहिष्णुता, स्वार्थान्धता एवं वैमनस्यता का ताण्डव है। धनी निर्धन का, बली निर्बल का, चालाक मूर्ख का शोषण कर रहा है। आज संसार में कैसे बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ सभी देशों की सरकारों को अपने संकेतों पर नचा रही हैं और उनकी दास बनी सरकारें अपने-अपने देश के नागरिकों को कैसे मूर्ख बनाकर उन्हें पालतू पशुओं की भाँति जीने के लिए विवश कर रही हैं।

मेरे मित्रो! विचारिये! इस संसार में एक वर्ग इंच भूमि भी क्या ऐसी बची है, जहाँ सुख-शान्ति का साम्राज्य हो? मेरे मत में ईश्वरीय व्यवस्थारूप वैज्ञानिक धर्म की स्थापना के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय इन सभी समस्याओं का समाधान करने में सक्षम नहीं है। ऐतरेय ब्राह्मण के वैज्ञानिक भाष्य '**वेदविज्ञान-आलोकः**' का यही प्रयोजन है। यह केवल ऐतरेय ब्राह्मण का ही भाष्य नहीं है, अपितु यह सम्पूर्ण सृष्टि एवं वेदादि शास्त्रों को समझने की लुप्त सनातन वैज्ञानिक प्रणाली की पुनः स्थापना करके व्यक्ति को व्यक्ति से, परिवार को परिवार से, समाज को समाज से, राष्ट्र को राष्ट्र से एवं सभी प्राणियों को परस्पर जोड़ने में आधार का कार्य करेगा। कुछ

समय में ही प्रकाशित होने वाला '**निरुक्त-भाष्य**' भी इसी भूमिका को और भी प्रखरता से करेगा।

> 'मैं वैदिक विज्ञान के द्वारा एक अखण्ड, सुखी व समृद्ध भारत के निर्माण की आधारशिला रखने का प्रयास कर रहा हूँ, जिसमें प्रत्येक भारतीय तन, मन, विचारों व संस्कारों से विशुद्ध भारतीय होगा। उसके पास अपना विज्ञान वेदों, ऋषियों व देवों के प्राचीन विज्ञान पर आधारित एवं अपनी भाषा हिन्दी व संस्कृत में होगा। उसे अपने पूर्वजों की प्रतिभा, चरित्र एवं संस्कारों पर गर्व होगा, उसे पाश्चात्य विद्वानों की बौद्धिक दासता से मुक्ति मिलेगी, जिससे लार्ड मैकाले का वर्तमान में साकार हो चुका स्वप्न ध्वस्त हो सकेगा। यह प्यारा राष्ट्र पुनः विश्वगुरु बनकर विश्व को शान्ति एवं आनन्द का मार्ग दिखाएगा।'

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक